



श्रीसीतारामाभ्यां नमः

## चित्रकूटकी झाँकी

### चित्रकूट

महों वन पावनो मुहावनो विहङ्ग मृग,

देखि अति लागत अनन्द रित मूट सो ।

संता-राम-लखन निवास पास मुनिनको,

सिद्ध साधु साधक सब विवेक मूट सो ॥

झरना झरत शारि सीतल पुनीत बारि,

अन्दाकिनि मंगुल महेश-जटागूट सो ।

तुलसी जो रामसो सनेह सोँचो चाहिये तो,

सेह्ये सनेहसौ विचित्र चित्रकूट सो ॥

( कविशर्मा उत्तरकाण्ड १४५ )

श्रीरामचरित्रसे सम्बन्ध रखनेवाले तीर्थोंमें चित्रकूटका स्थान बहुत ऊँचा है। चित्रकूट-प्राहात्म्यमें लिखा है कि 'यह प्रह्वपुरी है; इसमें तीस धनुषके प्रमाण एक यज्ञवेदी है, जहाँ यज्ञ करनेसे अग्निवेशादि मुनि परम सिद्धिको प्राप्त हुए थे और इसमें सारे तीर्थ निवास करते हैं।'

आजकल चित्रकूट न केवल उस पहाड़ीको कहते हैं जिसका प्रान्तिक नाम कामता है, परं उसके आस-पास कुछ दूरतक चित्रकूट कहलाता है। सच तो यह है कि पहले चित्रकूट

पर्वतहीका नाम रखा होगा, परन्तु आजकल यहाँ कोई विशेष चस्तु नहीं है जिसे चित्रकूट कहते हों। रामायणमें लिखा है कि श्रीराम, लक्ष्मण महर्षि वाल्मीकिसे चित्रकूटमें मिले ७। आजकल वाल्मीकिका आश्रम कामतासे १५ मील पूर्व बघमोही-गाँवमें लालापुर पहाड़ीपर बनाया जाता है। इससे हम यह अनुमान करते हैं कि जब श्रीरघुनाथजी यहाँ आये थे तब लालापुर पहाड़ीकी श्रेणी चित्रकूटतक फैली हुई थी या वाल्मीकिने एक आश्रम मन्दाकिनीके तटपर भी बनाया हो जहाँ श्रीरघुनाथजीने भी अपनी पर्णकुटीके लिये योग्य स्थान चुन लिया।

चित्रकूट दो शब्दोंसे बना है, चित्र और कूट = शिखर, चोटी। चित्र संस्कृतमें अशोकको भी कहते हैं, इससे मध्यप्रदेशके सुप्रसिद्ध विद्वान् हमारे मित्र रायबहादुर बाबू हीरालालजीका यह मत है कि यहाँ अशोकवन है इसीसे इस पहाड़ीका नाम चित्रकूट पड़ा। परन्तु वाल्मीकीय रामायणमें लिखा है—

पर्येममचलं भद्रे नानाद्रिजगणायुतम् ।

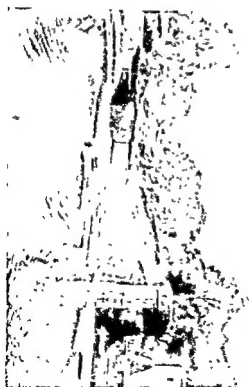
शिखरैः स्वमिवोद्भिदैर्घातुमद्भिर्विभूषितम् ॥

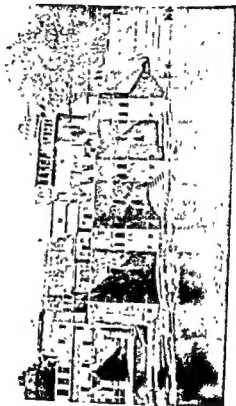
७ ततस्तौ पादचारेण गच्छन्तौ सह सीतया ।

रम्यमासेदनुः शैलं चित्रकूटं मनोरमम् ॥

इति सीता च रामश्च लक्ष्मणश्च कृताञ्जलिः ।

अभिगम्याश्रमं सर्वे वाल्मीकिमभ्यवादनम् ॥





केचिज्जन्मसहस्रम्      केचिज्जन्मसहस्रम् ॥  
 प.नमोऽपिहसोऽयं      केचिज्जन्मसहस्रम् ॥  
 पुनरावर्तनसहस्रम्      केचिज्जन्मसहस्रम् ॥  
 विराजन्तेऽखिलेन्द्रम्      देवाः धातुवन्निना ॥

( २ । १४ । ४-६ )

धौम्यनाथजी धौम्यानाजीमे कहने हैं—

‘हे भट्टे! माना प्रकारके पक्षियोंमें मैथिल, अनेक धातुओंसे भूषित, ऊँचे शिखरोंके इस पर्यंतको देखो। कोई चौदोंकी तरह बरफ़ है, कोई लोहके समान लाल है, कोई पाला, कोई मर्जोठके रङ्गका है, कोई इन्द्रनाल-मणिकों भौंति चमकता है, कोई पुष्परत्नको तरह, कोई स्फटिक-मणिकों तरह है, कोई केतकीके रङ्गके है, कोई लाले और कोई पान्के भौंति चमकते हैं।’

इसमें सिद्ध है कि अनेक रङ्गके धातुओंके कारण इस पहाड़ीका नाम चित्रकूट पड़ा।

भाजकूट चित्रकूट पृष्ठ संयुक्त-प्रान्तके पौड़ा जिलेकी करघी तहसीलमें और पृष्ठ चौथे जागीर पञ्चण्टीमें है। पहाड़ीके अतिरिक्त इसके अन्तर्गत कई गाँव हैं जिनमें सीतापुर प्रधान है। इसकी पूर्वी और दक्षिणी सीमा एक पर्यंतधेनी है जो चौच-चौचमें टूट गयी है। इस पहाड़ीपर बाँके-सिद्ध, देवाङ्गना, दन्मान-धारा, सीताको रमोई और अनमूया आदि तोर्ध हैं। दक्षिण-पश्चिममें गुप्तगोदायरी नामकी एक पहाड़ी नदी बड़ी गहरां गुफामेंसे निकलती है। यहाँसे पश्चिमकी सीमा उत्तर

भरतकृपतक चली गयी है। उत्तरकी सीमा एक कल्पित रेखा है जो भरतकृपको बाँके-सिद्धसे मिलानी है और राघव-प्रयागके पास सीतापूरको छूती है। इसी सीमापर भक्त यात्री पञ्चकोशों परिक्रमा पाँच दिनमें पूरी करते हैं।

## परिक्रमा

परिक्रमा दैवदर्शन और तीर्थ-यात्राका प्रधान अंश है।

परिक्रमाकी महिमा इस संस्कृत-श्लोकमें कही गयी है—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।

तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

भावार्थ—‘इस जन्म और पूर्व जन्मके जितने पाप हैं सब प्रदक्षिणाके एक-एक पदसे नष्ट होते हैं।’

यह तो हुई परिक्रमाकी उपयोगिता, परन्तु इससे तीर्थोंकी सीमा भी निश्चित होती है। रामायणमें लिखा है कि भरतजीने भी चित्रकूट-यात्रा की थी \*। उसी यात्राके क्रमसे अब भी परिक्रमा की जाती है।

पहले दिनकी परिक्रमा—राघव-प्रयागसे स्नान करके कामताकी प्रदक्षिणा करे और पुरीकी परिक्रमा करता हुआ सीतापूर छोड़े—६ मील।

\* देगे थल तीर्थ सकल, भरत पाँच दिन भाँझ।

कहत सुनत हरिहर मुजय, गयेउ दिवस भइ साँझ ॥







दूसरे दिनकी परिक्रमा—राघव-प्रयागमें स्नान करके कोटिनार्थ जाय, यहाँसे देवान्ना, मीना-रमोई, हनुमान्धाराकी यात्रा करके नयागाँव होते हुए फिर सीतापूर लौटे—१२ मील।

तीसरे दिनकी परिक्रमा—राघव-प्रयागमें स्नान करके केशवगढ़, प्रमोदघन, जानकीकुण्ड, मिरसावन, फटिकशिखा, अनम्याजाँ होकर धावूपुरमें रहे—१० मील।

चौथे दिनकी परिक्रमा—धावूपुरसे गुनगोदावरी जाकर स्नान करें, यहाँमें कैलाशपर्यंत देखकर चविंपुरमें रहे—१० मील।

पाँचवें दिनकी परिक्रमा—चविंपुरसे भरतकूप जाय और यहाँ स्नान करके रामशय्या होते हुए सीतापूर लौटे—१२ मील।

### सीतापूर (पुरी)

यह छोटा-सा सुहावना नगर पयोप्णीके तटपर है और उर्मा म्यानके आस-पास बसा है जहाँ श्रीरघुनाथजी पर्णकुटी बनाकर रहे थे। इसे पुरी भी कहते हैं। पहले इसका नाम जैमिहपुर था और इसमें कोलोंकी बस्ती थी। पद्माके राजा अमानसिंहने इसे महन्त चरणदासजीको दे दिया और महन्तने इसका नाम बदलकर सीतापूर रख दिया। उनका अखाड़ा पुरी-भरमें सबसे उत्तम है और यह नगर उनके शिष्योंके पास है। नदीके घाट कहीं-कहीं सी फुटतक ऊँचे हैं और किनारेके मन्दिर बहुत पुराने न होनेपर भी हिन्दू-शिल्पके बहुत अच्छे नमूने हैं।

## चित्रकूटकी माँकी

निंदोंपरसे दृश्य अत्यन्त रमणीय है। यहाँसे कामता डोल है।

सीतापूरमें विशेषकर पण्डे रहते हैं।

## राघव-प्रयाग

यह स्थान सीतापूरका बड़ा तीर्थ है। यहाँ पयोष्णीमें पन्थाके आकारका नाला मिलता है जिसको यहाँके लोग मन्दाकिनी कहते हैं, यद्यपि अनसूयाजीसे इस स्थानतक सारी पयोष्णी भी कभी-कभी मन्दाकिनी कही जाती है। नाला सरसात बीते सूख जाता है और तब एक पयोष्णी ही रह जाती है। फिर भी इस स्थानका नाम प्रयाग होनेसे जैसे प्रयागराज (इलाहाबाद) में एक तीसरी नदी सरस्वती नीचे-नीचे भूदृश्य-रूपसे गंगा-यमुनासे मिलती है वैसे ही यहाँ भी गुप्तनदी गायत्री (मायित्री) मान ली गयी है। कहा जाता है कि श्रीरघुनाथजीने, जब सुना कि पिताका स्वर्गवास हो गया, तब यहाँ तिलाञ्जलि दी थी।

राघव-प्रयागको बड़ाई-यम्बानमें यह कथा प्रसिद्ध है—

- 'जब रघुनाथजीने प्रयागको तीर्थोंका राजा बनाया तब बड़ा अभिमान हो गया और उसने नारदसे कहा कि हम ... .. राजा हैं। नारदजी सुनकर मुसकराये। उनके मुसकरानेका कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया ... .. भगवान्ने सारे तीर्थोंका राजा बनाया हो परन्तु





नुम चित्रकूट के राजा नहीं बन सकते। नुमको भी शिवनाम हो तो चित्रकूट में जाकर श्रीरघुनाथजी में पूछ लो।' इस बात पर प्रयागराज इसी स्थान पर श्रीरघुनाथजी में मिले, और उनसे मारटकी बात कही। श्रीरघुनाथजी ने उत्तर दिया कि 'हमने नुमको मारे तोथोंका राजा बनाया है, अपने घरका राजा नहीं बनाया।' तबसे इस स्थानका नाम राघव-प्रयाग पड़ा।

कहा भी है—

चित्रकूट निज धाम, जहाँ बिराजै स्थितमनराम ॥

इसी पाटके ऊपर मजगन्धर्वर (मजगन्धर्वर) का पड़ा मन्दिर है। इसे पलाके राजा अमानसिंहने बनवाया था।

मजगन्धर्वका कथा यहाँ रोचक है। इससे जैमी हमने सुनी है वैसे ही पाटकोंका भेट को जाता है।

जब श्रीरघुनाथजी यहाँ आए उस समय मजगन्धर्व यहाँका राजा था। मर्यादा-पुरुषोत्तम दृश्यके राजदरमें बिना उसकी आज्ञाके, कैसे रह सकते थे। इसलिये छोटे भाईको आज्ञा लेनेके लिये मजगन्धर्वके पास भेजा। मजगन्धर्वको उनके दर्शन करने ही अनुभव हो गया कि मेरे घरमें मर्यादा-पुरुषोत्तमने पदार्पण किया है और लक्ष्मणजीकी बात सुनते ही वह नङ्गा नाचने लगा। लक्ष्मणजीको मोध आया परन्तु स्वामीकी आज्ञा बिना ये कर ही क्या सकते थे? श्रीरघुनाथजीके पास लौट आये। श्रीरघुनाथजीने पूछा, 'कहो, आज्ञा मिली?' लक्ष्मणजीने उत्तर दिया कि 'जिसके

राम आपने मुझे भेजा था यह पागल है। श्रीरघुनाथजी बोले, कहो तो उसने क्या कहा? बहुत लोग बातोंसे उत्तर नहीं देते। इन्द्रियसे अपने मनका भाव प्रकट कर देते हैं। तब लक्ष्मणजी ने सारा व्योरा कह सुनाया और कहा कि 'आपका डर न होता तो मैं उसे बिना मारे न छोड़ता।' इसपर श्रीरघुनाथजी बोले कि, 'बान्ना तो मिला गयी। उसका अभिप्राय यह था कि मैं मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको बसमें रखता हूँ उसकी कहीं आर्ति नहीं है। तुमसे बढ़कर जितेन्द्रिय कौन है? अब सुखसे हमली यहाँ रहें।'।

## मन्दाकिनी-घाट

राघव-प्रयागके सामनेका घाट मन्दाकिनी-घाट कहल है और नयागाँव जागीरमें है। पक्काघाट जागीरदारके पुरुषोंने बनवाया था।

## राम-घाट

वीरका घाट राम-घाट कहलाता है और इसके ऊँ मन्दिर यशवेदीके नामसे प्रसिद्ध है जहाँ ब्रह्माने यज्ञ किया इसी मन्दिरके जगमोहनमें उत्तरकी ओर पर्णकुटीका ॥ १६॥ श्रीरघुनाथजीने कुछ दिन निवास किया था।

॥ कथा गोस्वामी तुलसीदासजीने यों लिखी है-







रघुवर बहेउ छत्तन भल घाट । करिय कतहु अब टाहर टाट ॥  
 लपन दोस्र पय ठतर करारा। चहुँदिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा ॥  
 नदी पनच सर सम दम दाना । सकल कलुष कलि साउज नाना ॥  
 चित्रकूट जनु अचल अहेरी । पुर्क न घात मार मुउभेरी ॥  
 भस कहि लपन ठाँव दिखरावा । थल विलोकि रघुवर मुमु पावा ॥  
 रमेउ राम मन दूँवन्ह जाना । थले सहित सुरपति परधाना ॥  
 कोल किरात घेप सन भाये । रचे परन मृन सदन सोहाये ॥  
 धरनिन जाहि मग्गु दुइ भाला । एक छलित लघु एक बिसाला ॥

लपन-ज्ञानकी-सहित प्रभु, राजत रौचर निकेत ।

सोह मदन मुनिवेष जनु, रति चक्रुराज-समेत ॥

पर्णकुटीको साधारण लोग परमकुटी में कहते हैं ।

## तुलसीदासजीकी कुटी

गोस्वामी तुलसीदासजीके चित्रकूटवामके दो स्थान हैं,  
 एक रामघाटके सामने गलामे, दूसरा कामनाको परिक्रमामें  
 चरणपादुकाके पास । रामघाटहोंके नियाममें गोस्वामीजीको  
 दर्शन

निसका प्रचलित दोहेमें वर्णन किया जाता है।

गाटपर भइ मग्ननकी भीर ।

हन घमैं तिलग हेल रघुबीर ॥



रघुपर बहेत लगन भल घाट । करिय बनहुँ भव टाहर छाट ॥  
 लपन शोगरुष टनर करारा। चहुँदिमि पिरेठ धनुष जिमि नारा ॥  
 नरी। पनष भर मम डम जाना । मरुन कटुष कनि माठज नाना ॥  
 चित्रकूट जनु भचल भरेरो । चुक म घाम मार मुठभेरी ॥  
 भम बहिलपन टावै दिग्रावा । थल विनोकि रघुपर मुगु पावा ॥  
 रमेठ राम मन देबन्ठ जाना । चले सहिल मुरपनि परधाना ॥  
 कोल किराम छेद मर भाये । रथे परन नून मदन सोहाये ॥  
 परनिम जाहि मग्गु दुइ माला । एउ लालन म्हुए म्हुए बिसाला ॥

लपन-जानकी-सहिल प्रभु, राजन रविपर निवेन ।

मोह मदन मुनिवेष जनु, रति चगुराज-ममेन ॥

पर्णकुटीको माधारण लोग परमकुटी भो कहने है ।

## तुलसीदासजीकी कुटी

गोस्वामी तुलसीदासजीके चित्रकूटवासके दो स्थान हैं,  
 एक रामघाटके सामने गलीमें, दूसरा कामताकी परिक्रमामें  
 धरणापातुकाके पास । रामघाटहीके नियासमें गोस्वामीजीको  
 साहस्य दर्शन हुए, जिसका प्रचलित दोहेमें वर्णन किया जाता है।

चित्रकूटके घाटपर भइ सन्तनकी भीर ।

तुलसीदास चन्दन घमें तिलक देत रघुबीर ॥

परन्तु यह दोहा टीक नहीं। वैजनाथकृत गोस्वामीजी जीवन-चरितमें इस दर्शनका पूरा वर्णन है। गोस्वामीजी दर्शन लिये अत्यन्त उत्कण्ठित थे। इसी उत्कण्ठित अवस्थाका विह्वल हो हमने अपने छपाये हुए राजापुरके अयोध्याकाण्डमें दिया था।

जब गोस्वामीजी अत्यन्त विह्वल हो गये तब प्रेमवत युगल सरकार राजाधिराजका रूप धारण करके विमानपर यह प्रकट हुए। उनके पीछे देवताओंके अनेक विमान आये थे।

रामघाट मन्दाकिनी भई विमानन भीर।

सुलसिदास चन्दन घस तिलक देत रघुबीर॥

रामघाटके ऊपरकी कुटीमें श्रीराम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियाँ हैं और दो-तीन साधु रहते हैं। परिक्रमाकी कुटीमें गोस्वामीजीकी मिट्टीकी मूर्ति है।

## जानकी-कुण्ड

पर्णकुटीसे कुछ दूर मन्दाकिनीके किनारे-किनारे चलकर जानकी-कुण्ड मिलता है। प्राकृतिक शोभाके विचारसे यह स्थान अत्यन्त रमणीय है। नदीके दोनों तटोंपर सुहावना वन है और बीच-बीचमें रुफेद पत्थर निकलते हैं जिनपर युगल सरकार





चरण-चिह्न हैं। इनमें कोई बात बनायटकी नहीं है और जिन पत्थरोंपर चिह्न बने हैं वे आग्नेय हैं। रामभक्त यह मानते हैं कि जय युगल सरकार इनपर चलते थे तब पन्थर मोमकी भाँति गरम हो जाते थे।

## फटिक-शिला

इसके दो चित्र हैं। जय युगल सरकार चित्रकूटसे भद्रि-मुनिके आश्रमको जाते थे, तो रास्तेमें नदी-जटपर एक भारी मण्ड शिलापर बैठे थे और यहाँ—

“ सुनि कुमुम सुहाये । निज कर भूषण राम बनाये म  
सीतहि पहिराये प्रभु मादर ।

यहाँ जयन्तने कीचिका रूप धरकर धीर्माताजीके घाँघ  
मारों थी जिसका वर्णन रामायण अरण्यकाण्डमें है।

इसके दो चित्र हैं, एक फटिक-शिलाका है। अब दो शिलारों  
हैं जो कदाचित् पहले मिली हुई थीं। यह दोनों मन्दाकिनीके  
घाँघमें स्थित हैं। चित्रमें जो भगली शिला है उसपर चरणके  
चिह्न है। दूसरे चित्रमें जो दृश्य दिखाया गया है यह शिलाके  
नामने पड़ता है और शिलापरसे लिया गया है। यह बड़ा  
मनोहर दृश्य है।



## कामता

यों तो परिक्रमामें जितने तीर्थ आ जाते हैं सब चित्रकूटके अन्तर्गत हैं परन्तु मुख्य तीर्थ यही पहाड़ी है। इसे चित्रकूट न कहकर कामता क्यों कहते हैं। इसका कारण हमारी समझमें नहीं आता। गोरुवामी तुलसीदासजीने लिखा है—

कामद भेगिरि रामप्रसादा।

यही कारण था तो कामदगिरि कहनेमें क्या आपत्ति थी? यह देकरा युगल सरकारका सिंहासन माना जाता है और उनके निवास-स्थान होनेके कारण संसारभरके तीर्थ इसीके चारों ओर आकर बस गये। यों तो रामायणमें लिखा है कि श्रीरघुनाथजी कुछ दिन यहाँ रहकर दक्षिण चले गये थे, परन्तु भक्तोंका विश्वास यह है कि अब भी यहाँ विराजमान हैं।

चित्रकूट सप्त दिन व्रत प्रभु सिय-लखन-समेत।

यह पहाड़ी विन्ध्याचलकी शाखामें शिखर-श्रेणीकी अन्तिम छोटी है और तुड़ील होनेके कारण महाकवि कालिदासने मेघदूत-काव्यमें इसे मृकुच-समान बखाना है। यह सदा हरी-भरी रहती है और इसके तटपर चारों ओर मन्दिरोंकी पंक्ति है। चालमोकिने

सरकारके रहने योग्य इसे बताया, तो कहा था—

मुहावन कामन चारु । करि केहरि भृग विहंग विहारु ॥

पुनीत पुरान बग्वानी । अत्रिप्रिया निज तप-बल शानी ॥

चारनाथ मन्दारिनि । जो सब पातक-पोतक-ढाकिनि ॥

विष्णु बहुरसही । करहि जोग-जप-तप तनु कमही ॥



## कामता

यों तो परिक्रमामें जितने तीर्थ आ जाते हैं सब अन्तर्गत हैं परन्तु मुख्य तीर्थ यही पहाड़ी है। इसे कहकर कामता धर्यो कहते हैं। इसका कारण हमारी नहीं आता। गोस्वामी तुलसीदासजीने लिखा है—

कामद भेगिरि रामप्रसादा।

यही कारण था तो कामदगिरि कहनेमें क्या आपत्ति थी यह देकरा युगल सरकारका सिंहासन माना जाता है उनके निवास-स्थान होनेके कारण संसारभरके तीर्थ इस चारों ओर आकर बस गये। यों तो रामायणमें लिखा है धीरघुनाथजी कुछ दिन यहाँ रहकर दक्षिण चले गये थे, पर मन्त्रोंका विश्वास यह है कि अब भी यहीं विराजमान हैं।

चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय-लखन-समेत।

यह पहाड़ी विन्ध्याचलकी शाखामें शिवर-श्रेणीकी अन्तिम चौटी है और मुड़ील होनेके कारण महारुचि कालिदासने मेघदूत-काव्यमें इसे भूकृच्छ-समान बखाना है। यह सदा हरी-भरी रहती है और इसके तटपर चारों ओर मन्दिरोंकी संक्ति है। घाटमोक्ति जय युगल सरकारके रहने योग्य इसे बनाया, तो कहा था—

मैल मुद्रापन बानन चारु। करि केहरि शृंग विहंग विहार ॥

नदी पुर्वीय पुरान बनावी। चरित्रिष्य। निग्न नय-पल शानी ॥

मुरारि धार नाई मन्दारिनि। ओ गय पागल-गोलक-चारिनि ॥

दिग्भनिर बहु बगरी। करहि जोग-जय-नय ननु बगरी ॥





### चित्रकूटकी भाँकी

आजकल भाँ पहाड़ी घेम्माँ हैं जैम्माँ महर्षि चाल्मार्गिने  
 यो। भेद इनना हो हो गया है कि अब यहाँ कर्ग (जगली  
 और केहरि (निह) नहीं रहने। इसकी परिक्रमा तीन मील  
 है। ई० सन १७२५ में राजा छत्रसालकी गानाँ चौदकुंभर  
 परिक्रमा पजाँ बनवा हो थी और ई० १८१७ में अ  
 सरकारने इसको मरम्मत करा दी। इसमें यात्रियोंको प्रद  
 करनेमें बड़ा सुभाँता होता है। यह पहाड़ी भगवान्का ि  
 है इसमें इसपर कोई हिन्दू नहीं चढ़ता और न इस  
 वृक्ष काटे जाने हैं। इसीसे यह सदा हरी-भरी रहते  
 चित्रकूट-माहात्म्यमें लिखा है कि इसके भीतर एक बहुत  
 महल और सुन्दर बाग है जिसमें युगल सरकार निवास  
 यह पहाड़ी आधाँ अंगरेजाँ राजमें और आधी पजपटी

### मुखारविन्द

साँतापूरसे कामताकी ओर आने हो पहले मुखारि  
 दर्शन होते हैं। यह स्थान धीरघुनाथजीकी मूर्तिके स  
 पूजनाय माना जाता है। इसमेंसे पहले दूधकी धारा नि  
 थी। सम्भव है कि पहाड़ीमें गुफा थी जिसमें युगल सरकार  
 थे उसीका यह मुख हो। गुफाके डारकी सल्लतमें मुख कहते

### चरण-चिह्न

चरण-चिह्न कई स्थानपर हैं परन्तु मुख्य तीन हैं (१)  
 फटिक-शिला, (२) जानकी-कुण्ड और (३) चरण-पा३

ॐ दरीमुखोत्थेन समीरथेन ।

फटिक-शिखरके चिह्न सफेद आग्नेय पत्थरके बने हैं और लामों  
 घरसके होंगे जिसका विचार भूविज्ञानमें हो सकता है। ऐसे ही  
 जानकी-कुण्डके भी हैं। चरण-पादुका कामनाको परिष्कृत है।  
 यहाँ तीन गुमटियाँ हैं, एकके नीचे एक छोटा-सा घाँघरौ पाँचवा  
 चिह्न है। यह श्रीजानकीजीके चरणका चिह्न बनाया जाता है।  
 दोफे नीचे बहुत बड़े-बड़े पाँवोंके चिह्न हैं, ये चिह्न उस समयके  
 बने कहे जाते हैं जब भक्तजों यहाँ आये थे और चारों भाई गले  
 मिले थे। इनमें कोई बात घनावटो नहीं है। चिह्न दूरसे ऐसे जान  
 पड़ते हैं मानो कोई अभी गोली मिट्टीपर चला गया है। इन्हीं चिह्नों-  
 का उल्लेख महाकवि कालिदासने अपने मेघदूत-काव्यमें किया है-  
 पर्वतः पुंसां रघुपतिर्दरशितं मेखलाम्।

‘चित्रकूटकी मेखला लोकके घन्य श्रीरघुनाथजीके चरणों-  
 के चिह्नोंसे अंकित है।’

धयालीस घरसमें ऊपर हुए जब हमने पहले-पहल इनके  
 दर्शन किये थे। हमने वहाँके साधुओंसे पूछा कि ये चिह्न आज-  
 कल चौरस धरतीपर हैं पर्वतकी मेखलामें नहीं। हमको उत्तर  
 कि इनके आस-पासकी नीची धरती मिट्टीसे पाट दी गयी  
 मिट्टी लगा करके यहाँतक लोग पहुँचते थे। मेघदूतसे  
 डेढ़-दो हजार घरस पहले भी ये चिह्न वर्तमान थे  
 कि चरण-चिह्न माने जाते थे।

### राम-शय्या

स स्थानकी घनावट किसीको समझमें नहीं आती। इसमें  
 कोई बात नहीं है। एक बड़ी शिलापर दो चिह्न ऐसे











### चित्राचरी काँके

मेहुए है जेमे कोमल रुईके गढ़ेपर दो प्राणियोंके मोनेमे  
रहे हैं। कहा जाना है कि एक चिह्न धीरधुनाथजीके ले-  
खना था और दूसरा धीरधुनाथजीके। दोनोंके बीचमे  
रिह है। पानप्रयाधममें रहनेमें युगल मरकार धनुष र-  
खकर मोने थे।

पत्थरपर चिह्न बन जाना एक अनोखी बात है, ॥  
बाण-चिह्न भी यंत्र ही है। भू-चिह्नके अनुसार ऐसे  
जन्मे भोतर बनते हैं। पाँछे पृथ्वीके उठनेसे पछाड़ बन  
है। इसमें लोगों घरमे लग जानें हैं। भक्तोंका चिह्नयस यह  
धीरधुनाथजीके रपशमें पत्थर मोमकी भोति कोमल हो गये  
पाँछेसे पत्थर-के-पत्थर रह गये। इनकी कथा यह है कि  
सरकार एक बार यनमें चिखरने थे कि रात हो गयी और यही  
रहे थे। इसके चारों ओरकी पक्की दीवार हमारे शिष्य  
मिदगोपालजी (सिधारामदास) ने बनवाई थी जो घर-  
छोड़कर साधु बनकर यही रहते थे।

### भरत-कूप

यह एक बहुत बड़ा कुआँ इसी नामके रेलवेस्टेशनसे  
मैल दक्षिण और कामतासे ६ मैल पश्चिमोत्तर है। रामा  
पढ़नेवाले जानते ही हैं कि भरतजी धीरधुनाथजीके राज्याभि-



देकरे आने से कुछ  
अविज्ञानवादी को मरिचके

1

आने से देकर है।

चिंतन

विमल कमल मग्न बानी ॥  
प्राप्त वीर्य वल वीर्य ॥  
आम अति परम विचार ॥  
सुखदित्त रूप विवेका ॥  
काल विदित्त वरिष्ठ ॥  
रत प्रेम अति अल आला ॥  
त नये वरिष्ठ रूप आग ॥  
आगत रूप विवे चलाई ॥  
प्राप्त अति परम अमृत ॥  
, लैत समीप सुख ।

आने से । तब अविज्ञानवादीने  
- १ भाषा -











1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

अनुराधा

[illegible]

सिवायु रसायन

। ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥

ಶ್ರೀಮತ್ ಸರ್ವಜ್ಞಾಚಾರ್ಯರವರ ಅಧೀನದಲ್ಲಿ



